कोरोना काल के कर्मयोद्धा : कार खरीदने के लिए इकट्ठा किये रु. 54 लाख गरीबों की सेवा में उपयोग में लिए

जिग्नेश गांधी ने सेवा करते रहने से 68 दिन अपनी बिटिया को नहीं मिल पाए

जिग्नेश गांधी

365 दिन गरीबो की सेवा में रत रहते हैं श्री गांधी, हर वर्ष 20 से 30 लाख रु तक का उपयोग करते है गरीबो के लिए

गणपत भंसाली

किसी चिंतक ने ठीक ही कहा है कि सेवा एक ऐसा कार्य है जो बताता है कि आप अंदर से कितने सुखी, समृद्ध व संतुष्ट हैं। सेवा करने से आपको एक ऐसी प्रकार की संतुष्टि की अनुभूति होती है जो आपको किसी और चीज से प्राप्त हो ही नही सकती। सच्ची सेवा सच्ची भावना से ही हो सकती है। सेवा के लिए मन में श्रद्धा होनी चाहिए। मुंशी प्रेमचंद ने तो कहा है कि सेवा मनुष्य की स्वभाविक वृति है सेवा ही मानव जीवन का आधार है। चिंतकों प्रबुद्ध जनों के इन विचारों व उनकी प्रेरणा से इस कोरोना काल के दौरान लॉक डाउन अवधि में देश भर में सेवा भरे अनेक प्रयास हुए। इस श्रंखला में सूरत के भामाशाहों व दानवीरों ने जो दरियादिली के साथ व समर्पित भाव से सेवा की वो अद्वितीय थी। कोरोना काल के कर्मयोद्धा की श्रंखला में आज सेवाभावी गोल्डमैन श्री जिग्नेश गांधी की सेवाओं पर प्रकाश डाला जा रहा हैं।

सेवा के लिए समर्पित श्री जिग्नेश गांधी व उनकी समर्पित टीम

कई दशकों पूर्व सूरत के समीप मढ़ी से सूरत महानगर में आकर बसे श्री किरीट भाई गांधी के युवा सपुत्र श्री जिग्नेश गांधी ऐसे सेवा भावी व्यक्ति है जो 365 दिन सेवा में समर्पित मिलेंगे। इनके रोम रोम व कण कण में परोपकार की भावना समाई हुई हैं इस कोरोना महामारी के चलते जब लॉक डाउन लागू हुआ तो उद्योग-धंधे व कल-कारखाने सब बन्द हो गए। गरीबों व जरूरतमन्दों के रोजी व रोटी दोनों के लाले पड़ गए। ऊपर से लॉकडाउन के कारण लोग घरों से बाहर भी नही निकल सकते थे तो ऐसे समय में दिल में परोपकार व सेवा के भाव रखने वाले सेकड़ो संगठन व्यक्ति आगे आए और लॉक डाउन के पहले दिन से ही सेवा में जुट गए। इन सेवाभावियो में की श्रंखला में एक नाम बड़े ही फक्र व गौरव के साथ लिया जाता है और वो है श्री जिग्नेश गांधी। श्री जिग्नेश गांधी के साथ अपनी धर्म पत्नी श्रीमती मेघना गांधी, एलायंस क्लब ऑफ हॉप से जुड़ी श्रीमती चेलना जैन, पूजा महाड़ी, अंशु अग्रवाल आदि समर्पित सेवाभावियों की टीम सेवा में जुट गई थी।

लॉक डाउन के पहले दिन से आज तक के 122 दिनों में 8.50 लाख जरूरतमन्दों को परोस चुके हैं भोजन

एलायंस क्लब ऑफ हॉप से जुड़े श्री जिग्नेश गांधी व उनकी टीम की सेवाएं लॉक डाउन के पहले ही दिन प्रारम्भ हो गई थी। 22 जुलाई को इस सेवा के 122 दिन पूर्ण हुए हैं और इस अवधि में श्री गांधी की टीम 8,53,780 लाख लोगों को भोजन करा चुकी हैं। ये किचन उगतगाम में था जहां गर्मागर्म भोजन तैयार होता था। भोजन वितरित करने हेतु पालनपुर जकात नाका, उगत चौकड़ी, रांदेर, ताड़ बाजार के पीछे, पांडेसरा, उधना, सचिन जी आई डी सी आदि विस्तारों में टीम पहुंचती थी। भोजन में सब्जी, पूड़ी, दाल, चावल, स्वीट, नमकीन आदि सामग्री रहती व बच्चों को बिस्किट पैकेट भी दिए जाते थे। विशेष बात यह भी थी कि भोजन तैयार कराने से लेकर भोजन वितरित करने तक का जिम्मा श्री जिग्नेश गांधी ने संभाल रखा था। यहां तक पांडेसरा से किराना सामान तथा सब्जी मॉर्केट से सब्जियां तक खरीद कर अपनी कार में खुद ही ढोते थे।

6350 राशन किट व हजारों मास्क भी वितरित किए

श्री जिग्नेश गांधी व उनके सहयोगियों नें जहां साढ़े आठ लाख से ज्यादा भोजन पैकेट वितरित किए वहीं 6350 राशन किटें भी गरीबों व जरूरतमन्दों को उपलब्ध कराई। एक किट में 5 किलो आटा, 5 किलो चावल, 1 किलो दाल, 1 किलो मूंग दाल, 1 लीटर तेल आदि राशन सामग्री का समावेश था। एक किट की लागत थोक में लगभग 540 रु आई हैं। श्री जिग्नेश गांधी ने सबसे पहले 200 विधवाओं को ये राशन की किट दी। व पांडेसरा, सचिन तथा कतारगाम आदि विस्तारों के गरीबो व जरूरतमन्दों को मुहैया कराई। राशन किट के अलावा 14 हजार मास्क भी वितरित किए तथा इम्युनिटी बढ़ाने का उपयोगी काढ़ा भी लगभग 7500 लौगों को पिलाया। तथा नन्हे मुन्ने बच्चो तथा युवाओं को चप्पलें भी खूब बांटी हैं।

सेवा के कारण लॉक डाउन के 68 दिनों तक अपनी प्यारी बिटिया से मिल नही पाए

कोरोना काल में लॉक डाउन अवधि में श्री जिग्नेश गांधी 23 मार्च से 31 मई तक के दौरान रोज़ सुबह 6 बजे सेवा कार्यों को अंजाम देने हेतु घर से निकल जाते थे और रात्रि में 11 बजे के करीब घर लौटते थे तो सुबह व रात्रि में बिटिया नींद में ही रहती, बस उसे सोता छोड़ घर से प्रस्थान कर देते और अपने सेवा धर्म को निभाने में जुट जाते। इस कारण अपनी प्यारी बिटिया से वे 68 दिन लगातार नही मिल पाए।

कार के लिए रखे लाख रुपयों से की गरीबो की सेवा

श्री जिग्नेश गांधी ने करीब 54 लाख रुपये की बचत कर एक किया कार खरीदने का मानस बनाया था तो इतने में विश्व व्यापी कोरोना महामारी ने दस्तक दे दी और कार खरीदने का विचार स्थगित कर दिया। और जुट गए सेवा में, गांधी बताते है कि कार तो 40 लाख के आस पास कीमत की थी, लेकिन 54 लाख की राशि जो बचाई हुई थी। उस राशि से गरीबो की सेवा कर मुझे असीम आनंद की अनुभूति हो रही हैं।

एक किलो सोने के आभूषण भी पहनते है गोल्डमैन श्री जिग्नेश गांधी

श्री जिग्नेश गांधी गोल्डमैन के रूप में भी जाने जाते हैं वे हरदम गले में मोटी मोटी चेनें, हाथ में सोने की अंगूठियों से लेकर ब्रासलेट आदि भी पहन कर रखते हैं। इस सोने के आभूषणों को तराजू पर तोला जाए तो लगभग एक किलो सोने के समकक्ष होंगे। श्री गांधी बताते हैं कि उनका ये शौक है कि जितना भी पैसा इकट्ठा होता है उसमें से अधिकांश राशि के सोने के जेवर खरीद देता हूँ। सोने के आभूषण पहनने के पीछे अपने एक दोस्त का उदाहरण बताया कि उनके मित्र के पिताजी गम्भीर बीमारी के कारण हॉस्पिटल में एडमिट हो गए लेकिन डॉक्टरों ने तीन लाख की राशि जमा कराने हेतु कहा लेकिन पैसा बैंक में होने के बावजूद छुट्टी के कारण बैंक से पैसा निकाल नही पाए तो उन्होंने सोने के आभूषण गिरवी रख कर तीन लाख रु जुटाए व हॉस्पिटल में जमा कराए। ये वाक्या देखने के बाद श्री गांधी ने सोने में निवेश करना उचित समझा।

बेहद ही गरीबी में दिन गुजारे इस लिए गरीबों की पीड़ा भली भांति समझता हूं और उनकी सेवा में जुटा रहता हूँ

श्री जिग्नेश गांधी बताते है कि उन्होंने बेहद ही गरीबी में दिन गुजारे हैं यहां तक एक दो जोड़ी कपड़ें ही उनके पास रहते थे। मात्र 200 रु प्रति माह में नोकरी कर जैसे तैसे गुजारा करते थे। इसलिए गरीबों की पीड़ा में भली भांति समझता हूं। और उनके हमदर्द के रूप में रहकर बड़े ही संतोष की अनुभूति होती हैं। गांधी के पिता श्री किरीट भाई गांधी ने 40 वर्ष पूर्व टेक्सटाइल्स मशीनरी का व्यवसाय प्रारम्भ किया था वो आज बढ़ कर व्यापक रूप में पनप गया हैं। मिलों में लगी पुरानी मशीने खरीदते व बेचते हैं, गांधी पूरी की पूरी टेक्सटाइल्स यूनिट तक खरीदने का माद्दा रखते है व अनेकों रुग्ण इकाइयां खरीदी भी हैं। पुरानी मशीनरी के साथ नई मशीने भी खरीदते हैं, श्री गांधी का मशीनरी का कारोबार अहमदाबाद, मुम्बई, भीलवाड़ा, सोलापुर, लुधियाना, बालोतरा, पाली आदि शहरों तक फैला हुआ है यानी किसी भी शहर या कस्बे में किसी भी हालत में टेक्सटाइल्स मशीनरी या पूरी की पूरी इकाई है तो श्री गांधी उसे खरीद देते है और किसी को चाहिए तो बिक्री के लिए उपलब्ध भी हैं।

सबको प्यार सबकी सेवा
MAHAVIR INTERNATIONAL
जीओ और जीने दो

365 दिन अनवरत रूप से उपलब्ध रहती हैं, बुजुर्ग महिलाओं, पुरुषों, नन्हे नन्हे बच्चो के प्रति श्री गांधी का अपार प्रेम व वात्सल्य भाव उमड़ता रहता है। बुजुर्गों को तो अपने हाथ से भोजन कराते रहते है व नन्हे मुन्ने बच्चे भले कितने गंदे कपड़े पहन रखे हो तो उनको गोदी में उठा कर उन्हें बिस्किट, टॉफी, खिलाने, कपड़े, बूट, चप्पल, पुरानी नई साइकिलें आदि देकर उनके चेहरे पर मुस्कुराहट बिखेरना उनकी दिनचर्या का हिस्सा हैं। गरीबों को बादाम, काजू, अंजीर, किशमिश, पिस्ता, जर्दालु आदि 1000 से 1500 रु प्रतिकिलो की महंगी कीमत के ड्राई फ्रूट तक के पैकेट कई बार बांटे हैं। प्रति वर्ष 20 से 30 लाख व किसी साल 40 लाख रु तक का खर्च उठाते है गरीबो की सेवा हेतु

ओल्डएज होम में नियमित सेवाएं

श्री जिग्नेश गांधी वयोवृद्ध उम्र के अशस्क्त, बीमार, दिव्यांग लोगो की सेवा प्राथमिकता से करते है ऐसे अनेक वृद्ध पुरुष महिलाएं है जो स्वंय उठ कर बाथरूम आदि नही जा सकते, ऐसे लाचार वयोवृद्ध लोगों के लिए श्री गांधी हर रोज डायपर्स लेकर पहुंच जाते है व अपने हाथों से उन्हें खड़ा करने की कोशिश करते, व्हील चेयर से उन्हें एक जगह से दूसरे जगह लेकर जाते। उन वृद्धों के साथ सेल्फी फोटो आदि खींचने का श्री गांधी को गजब का शौक है। जिग्नेश गांधी के फेसबुक एकाउंट पर सर्च करेंगे तो पूरी वॉल गरीबों जरूरतमन्दों, दिव्यांगों, अनाथों, मंदबुद्धि बच्चों, मुक बधिरो की सेवा करते हुए फोटो मिलेंगे। लोग फिल्मी हीरो के साथ फोटो खिंचवा कर फेसबुक, वॉट्सऐप पर पोस्ट करते व गर्व करते लेकिन श्री जिग्नेश गांधी के लिए कोई हीरो या सेलिब्रिटी है तो वो है गरीब, लाचार, दिव्यांग आदि।

खुद वैष्णव व धर्मपत्नी मेघना गांधी जैन परिवार से

श्री जिग्नेश गांधी बहुआयामी सेवाओं से जुड़े हुए हैं, उनकी दिनचर्या का अधिकांश हिस्सा तो गरीबो की सेवा में ही नियोजित हो जाता है। परिवार के सभी सदस्य पूरा साथ देते है विशेष यह भी हैं कि सेवा के इस अभियान में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मेघना गांधी भी अधिकांश रूप से साथ में रहती हैं, श्रीमती मेघना जैन परिवार से है जबकि श्री जिग्नेश गांधी वैष्णव परिवार से। घर में भगवान कृष्ण की मूर्ति भी बिराजमान है तो दूसरी तरफ जैन देहरासर भी हैं जहाँ भगवान पार्श्वनाथ, भगवान ऋषभ आदि तीर्थंकरों की प्रतिमाएं बिराजमान हैं। श्री गांधी वैष्णव होते हुए जैन अनुष्ठान पद्धति से तीन अट्ठाइयाँ (आठ दिन लगातार उपवास को अट्ठाई की तपस्या कहा जाता है) इसके अलावा नवपद की ओली भी कर चुके हैं। वे जैन वैष्णव में कुछ भी फर्क नही समझते, घर में पूरा जैन पद्धति से भोजन तैयार किया जाता है, आलू, प्याज, लहसुन, बैंगन आदि जमीकंद कभी भी घर मे नही लाते। श्री जिग्नेश गांधी ने कभी चाय, कॉफी, कोल्डड्रिंक, शराब आदि नशे को छुआ तक नही। श्री गांधी कहते है कि मुझे एक ही नशा है और वो नशा है गरीबों की सेवा का। वो नशा मेरा दिन ब दिन बढ़ता ही जा रहा है और ये नशा मेरी अर्धांगिनी व परिवार तथा मित्रों में भी समाया हुआ हैं।

5 हजार छात्रों के पढ़ाई का खर्च उठा रहे हैं श्री गांधी

सेवा में समर्पित श्री जिग्नेश गांधी तकरीबन 5 हजार गरीब बच्चों के अध्ययन के खर्च का जिम्मा उठा रहे हैं, जिसमें 2 हजार अनाथ बच्चे, 1200 डिसेबल व 1800 बच्चे गरीब है, उनकी पढ़ाई, पाठ्य पुस्तकें, स्कूल यूनिफॉर्म, स्कूल बैग, शूज आदि की तमाम जिम्मेवारी श्री जिग्नेश गांधी ने ले रखी है, वे पारले पॉइंट पर सड़क किनारे 60 बच्चो को खुले आसमान के नीचे पढ़ा कर जिम्मेदार नागरिक बनाने में जुटे हुए हैं ।

गरीबो को मेडिकल सुविधाएं उपलब्ध करा रहे हैं श्री गांधी

इन दिनों श्री गांधी गरीब लोगों के उपचार हेतु फंड इकट्ठा करने में जुटे हुए है ताकि पैसे के अभाव में किसी की जान नही चली जाए। भले ही मरीज के लिए एक लाख या अधिक रु खर्च कर भी जिंदगी बचाई जाए। वे इस प्रॉजेक्ट पर पूरी तरह समर्पित भाव से लगे हुए हैं।

जीएसटी डिपार्टमेन्ट ने कपड़ा व्यापारियों का 150 करोड़ का फर्जी बिलींग कौभांड का पर्दाफाश किया

सूरत के व्यापारी ने कोलकाता की कंपनी से फर्जी बिल और ओर्डर लेकर कौभांड किया था

लोकतेज संवाददाता

सूरत। डायरेक्ट्रेट जनरल ऑफ गुड्स एण्ड सर्विस एण्ड टैक्स डिपार्टमेन्ट द्वारा सूरत के कपड़ा व्यापारियों का 150 करोड़ रुपए के फर्जी बिलिंग घोटाले का पर्दाफाश किया गया है।

सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार डीजीजीआई को गुप्त सूचना मिली थी कि कुछ व्यापारी फर्जी बिलिंग घोटाले में संलिप्त हैं। जिसके आधार पर विभाग ने कार्यवाही करते हुए कुछ स्थलों पर जांच की कार्यवाही की थी। जिसमें कोलकाता की कन्हैया कार्गो मूवर्स के पास से सूरत के कुछ कपड़ा के व्यापारी गलत तौर पर माल मंगवाते थे। जिसके बिलों और ट्रांसपोर्ट के ऑर्डर वगैरह प्राप्त करते थे। सूरत के व्यापारी कैश अथवा आरटीजीएस के माध्यम से ट्रांसपोर्टर को रुपए भेजते थे। जो फिर से उन्हें एजेन्ट के माध्यम से वापस मिल जाता था। जिसके एवज में एजेन्ट दो प्रतिशत कमिशन चार्ज करता था। विभाग द्वारा की गई कार्यवाही में एक एजेन्ट के पास से 20 लाख रुपए का कैश मिला है। अभी तक यह फर्जी बिलिंग घोटाला 150 करोड़ रुपए तक के होने की आशंका व्यक्त की जा रही है।

अन्य एक केस में एक टेक्सटाइल मैन्युफैक्चर द्वारा अपने मशीनों की कीमत कम दिखाकर चूना लगाया जाता था। कंपनी संचालक मशीन की कीमत कम दिखाते थे और उतनी रकम का चेक लेते थे। वहीं मशीन की कीमत अधिक होने से बाकी की रकम कैश में लेते थे। इस तरह उन्हें कम जीएसटी चुकानी पड़ती थी। इस केस में विभाग ने 80 लाख रुपए की जीएसटी चोरी पकड़ी है जिसमें से 68 लाख की रिकवरी कर ली गई है। तीसरे केस में डीजीजीआई के अधिकारियों द्वारा खेडा की जेट फाइबर में छापेमारी कर 10 करोड़ रुपए की जीएसटी चोरी पकड़ी गई थी। खेडा की जेट फाइबर प्राइवेट लिमिटेड पानी की टंकियों समेत अन्य मैन्युफैक्चरिंग कार्य करती है। उनका राज्य में कुछ स्थलों पर ऑफिस है। विभाग ने जानकारी दी है कि जेट फाइबर द्वारा गलत बिलों के आधार पर 10 करोड़ रुपए की फर्जी आईटीसी प्राप्त की गई है।

अहमदाबाद स्थित बृहती फाउंडेशन ने

गुजरात में स्टार्ट-अप और एमएसएमई की मदद के लिए इंक कोविज-19 चैलेंज की घोषणा की

लोकतेज संवाददाता

अहमदाबाद । नोवल कोरोना वायरस का प्रभाव बढ़ रहा है। देश वैश्विक महामारी को नियंत्रित करने और नुकसान को कम करने के लिए कई कदम उठा रहा है, लेकिन अर्थव्यवस्था में व्यापक अनिश्चितताओं के कारण स्टार्ट-अप, एमएसएमई और युवा उद्यमियों संघर्ष कर रहे है। इन उपक्रमों का अस्तित्व उस स्थिति में महत्वपूर्ण हो गया है, जब देश भर में लंबे समय तक तालाबंदी के कारण आर्थिक गतिविधियाँ गतिरोध में आ गई हैं। इस समस्या को दूर करने के लिए, अहमदाबाद स्थित बृहती फाउंडेशन, टीआई ई अहमदाबाद और एआईसीजीयुएसईसी के सहयोग से, इंक कोविड-19 चैलेंज नामक एक पहल शुरू की है। इस पहल का उद्देश्य गुजरात आधारित स्टार्ट-अप, एमएसएमई और युवा उद्यमियों को समुदाय में कोविड-19 के प्रभाव को कम करने के लिए अपने प्रभावी व्यापारिक विचारों और व्यावहारिक समाधानों को लागू करने में मदद करना है। इस प्रतियोगिता के बाद, स्टार्ट-अप और एमएसएमई का चयन किया जाएगा, जिसके तहत चयनित स्टार्ट-अप और एमएसएमई को सम्मानित किया जाएगा। 5 लाख की वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी। इसके अलावा, चयनित स्टार्ट-अप और एमएसएमई को योजना और कार्यान्वयन जैसे व्यावसायिक कार्यों पर परामर्श दिया जाएगा।